

062728



AECHN2.4

Reg. No.

| | | | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|--|--|
| | | | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|--|--|

II Semester B.Sc./BVSC/M.Sc. (Biological Science) B.S.(4) BOC, B.Sc.(Hon)
Degree Examination, September - 2023

LANGUAGE HINDI

"KAVYASMRITHI" - HINDI KAVITHA AUR ANUVAD

(NEP Semester Scheme Under AECC - 2020 F+R 2021 Onwards)

Paper - II

Time : 2½ Hours

Maximum Marks : 60

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। (10×1=10)

- 1) जिस हृदय में प्रेम का संचार न हो, वह हृदय कैसा होता है?
- 2) मीराबाई के आराध्य देव का नाम लिखिए।
- 3) रहीम के अनुसार मछली किससे प्रेम करना नहीं छोड़ती?
- 4) ऋषि गौतम की पत्नी का नाम क्या था?
- 5) "तोड़ती पत्थर" कविता के रचनाकार कौन हैं?
- 6) गुप्तजी ने भव रूपी कानन में, मनुष्य को किसकी तरह रहने के लिए कहा है?
- 7) पंतजी ने छुटपन में छिपकर क्या बोये थे?
- 8) किनकी बातें सुनकर लड़कियाँ, डरकर अपनी जगह जम जाती थीं?
- 9) भवानी प्रसाद मिश्र के अनुसार लोगों ने क्या बेच दिया?
- 10) किसकी गाथाएँ लक्ष्मीबाई को ज़बानी याद थीं?



II. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (2×7=14)

- 1) तेरा साँई तुझ में, ज्यों पहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिर फिर ढूँढे घास॥
- 2) टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार।
रहिमन फिरी—फिरि पोहिये, टूटे मुक्ता हार॥

[P.T.O.]



(2)

AECHN2.4

- 3) इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं;
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव-ममता के दाने बोने हैं,—
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की, — जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ —
हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।

III. किसी एक कविता का सारांश लिखिए।

(1×16=16)

- 1) पाषाणी।
- 2) झॉसी की रानी।

IV. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए।

(1×5=5)

- 1) नर हो न निराश करो मन को।
- 2) हॉं हजुर, मैं गीत बेचता हूँ।

V. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(2×4=8)

- 1) अनुवाद के लक्षण पर प्रकाश डालिए।
- 2) अनुवाद की परिभाषा लिखिए।
- 3) अनुवाद के प्रकारों को सोदाहरण समझाइए।

VI. हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

(1×7=7)

By the grace of God, the educated people of our country today are eager to do reform the country. The first step for this is education. At Present not even 20% of our people are educated. But among the developed countries, there are some where we cannot find even 5% of educated people.

In our country education is thought of only for obtaining service.

दैवत कृपेयुंद इंदु नमू दैशद शिक्खित जनरु नमू दैशवन्नु सुधारिसबैकेंदु लुत्सुकरागिद्वारै. सुधारणैय मोदलने मेष्टिलु शिक्खण. नमू जनरुलि शैकड 20% जनरु विदुयवन्तरागिद्वारै. अदरै अभिवृद्धि हूंदिद केलवु दैशगळलि शैकडा 5% जनरु कूड अविदुयवन्तरु सिगलाररु. नमू दैशदलि विदुयैयंदरै नूकरियन्नु पडैयुवदु इंदु त्रिदिद्वारै.